The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-3, Issue-4, January-2025
www.theresearchdialogue.com

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की ई–लर्निंग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

डॉ0 संजय कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
स्वामी शुकदेवानन्द कालेज, शाहजहॉपुर

सार

पिछले कुछ वर्षों में, दुनिया भर में शिक्षा प्रणाली में कई बदलाव हुए हैं। बदलते समय के साथ, शिक्षा प्रणाली की समग्र संरचना को विभिन्न सुधारों से गुजरना पड़ा। शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ी क्रांति तब घटित होनी शुरू हुई जब 1960 के दशक में दुनिया के कुछ हिस्सों में कंप्यूटर और सूचना संचार प्रौद्योगिकियों (आईसीटी) का प्रवेश हुआ। हाल के वर्षों में, आईसीटी को न केवल शिक्षा प्रणाली के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में स्थापित किया गया है, बल्कि इसने अपने साथ शिक्षण और सीखने के समग्र तरीके को बदलना या नया स्वरूप देना शुरू कर दिया है। नतीजतन ई–लर्निंग, वर्चुअल लर्निंग, मिश्रित लर्निंग और फ्लिप्ड क्लासरूम जैसी अवधारणाएं उभरने लगी हैं। ई–लर्निंग सीखने की मूल्य श्रृंखला के सबसे महत्वपूर्ण हिस्सों में से एक या अधिक को बढ़ाने और सुधारने के लिए कंप्यूटर और नेटवर्क का उपयोग करने के लिए प्रक्रियाओं, सामग्री और बुनियादी ढांचे का एक विशाल संयोजन है।

ई–लर्निंग की आवश्यकताः– ई–लर्निंग सीखने की प्रक्रिया में प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग को सुविधाजनक बनाता है। यह बिना किसी भौगोलिक सीमा के दूरस्थ शिक्षा की सुविधा प्रदान करता है। ई–लर्निंग की आवश्यकता इसकी विशेषताओं जैसे लचीलापन, ऑडियो विजुअल सामग्री में प्रभावी प्रस्तुति, दुनिया के विभिन्न हिस्सों से प्रशिक्षकों और शिक्षार्थियों की भागीदारी में निहित है।

अभिवृत्ति :– अभिवृत्ति, व्यक्ति के उस नज़रिए की ओर संकेत करती है जिसके कारण वह किसी वस्तु, परिस्थिति, संस्था या व्यक्ति के प्रति किसी विशिष्ट प्रकार का व्यवहार करता है। विषयों, पदार्थों, व्यक्तियों, पशुओं, पक्षियों, जातियों, धर्मों एवं प्रथाओं के प्रति वह प्रवृत्तियाँ, पूर्व प्रवृत्ति जो हमें विशिष्ट प्रकार से उनके साथ अनुक्रिया करने के लिए बाध्य करती है अभिवृत्ति कहलाती है।

समस्या कथनः– ''स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की ई–लर्निंग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।''

समस्या का परिभाषीकरणः–

1. **स्नातक स्तरः–** स्नातक एक डिग्री कोर्स है जिसे स्कूली शिक्षा यानी 12वीं तक पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् डिग्री कॉलेज से हासिल की जाती है।
2. **विद्यार्थी** – विद्यार्थी से आशय स्नातक पाठ्यक्रम में अध्ययनरत विद्यार्थियों से है।
3. **ई–लर्निंगः–** ई–लर्निंग, ऑनलाइन शिक्षा और सीखने की एक पद्धति है, ई–लर्निंग में, शिक्षक इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों और इंटरनेट का इस्तेमाल करके शिक्षा को सुविधाजनक बनाते हैं
4. **अभिवृत्तिः–** अभिवृत्ति वह मानसिक स्थिति है जिसमें व्यक्ति किसी व्यक्ति, वस्तु या संगठन के प्रति कुछ अनुकूल या प्रतिकूल विचार रखता है।

अध्ययन का उद्देश्यः–

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की ई–लर्निंग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

अध्ययन का सीमांकनः–

1. प्रस्तुत शोध पत्र शाहजहाँपुर जनपद के शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययनः–

- **चौधरी, गुलाब (2023)** ने, 'डिजिटल कक्षा द्वारा प्रदत्त शिक्षा के प्रति माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन' किया।
- **प्रकाश, ओम (2022)** ने, 'सामान्य एवं विशिष्ट विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन' किया।
- **डॉ. दीपा स्वामी (2021)**ने, 'छात्राओं में ई–लर्निंग की जानकारी पर एक अध्ययन' किया।
- **कोंवर, डॉ. इश्मिरेखा हैंडी के (2017)** ने, 'असम के लखीमपुर जिले के उत्तरी लखीमपुर के विशेष संदर्भ में ई–लर्निंग के प्रति कॉलेज के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति पर एक अध्ययन' किया।

- **कोंवर, डॉ. इश्मिरेखा हैंडी के (2017)** ने, 'असम के लखीमपुर जिले के उत्तरी लखीमपुर के विशेष संदर्भ में ई–लर्निंग के प्रति कॉलेज के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति पर एक अध्ययन' किया।

शोध प्रविधिः– प्रस्तुत शोध पत्र में आँकड़ों के संकलन हेतु सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है।

समष्टिः– प्रस्तुत अध्ययन में समग्र से आशय शाहजहाँपुर जनपद के नगर क्षेत्र में स्थित महाविद्यालयों में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् समस्त विद्यार्थियों से है।

शोध न्यादर्श एवं न्यादर्श तकनीकीः– प्रस्तुत शोध पत्र में न्यादर्श का चयन दो स्तरों पर किया गया है। प्रथम स्तर पर शाहजहाँपुर जनपद के नगर क्षेत्र में स्थित 08 महाविद्यालयों में से 04 महाविद्यालयों का चयन क्रमागत प्रतिचयन विधि से किया गया है। दूसरे स्तर पर न्यादर्श का चयन प्रथम स्तर पर चयनित महाविद्यालयों से प्रत्येक महाविद्यालय में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् सभी विद्यार्थियों में से 25 विद्यार्थियों का चयन लॉटरी विधि द्वारा किया गया इस प्रकार कुल 100 विद्यार्थियों को चयनित किया गया है।

प्रस्तुत उपकरण :– ई–लर्निंग के प्रति अभिवृत्ति मापन हेतु डॉ. महेश कुमार मुच्छल द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत 'ई–लर्निंग स्केल' का प्रयोग किया है। यह स्केल नेशनल साइकोलॉजी कॉर्पोरेशन द्वारा प्रकाशित है।

सांख्यिकी तकनीकी :– प्रस्तुत शोध पत्र शोध पत्र में सांख्यिकीय तकनीकी के रूप में प्रतिशत का प्रयोग किया गया है। जिसका सूत्र निम्न प्रकार है–

प्रतिशत = (प्राप्त आँकड़े / कुल आँकड़े) × 100

निष्कर्षः– शोधार्थी ने निर्धारित उद्देश्य के आधार पर ई–लर्निंग के प्रति अभिवृत्ति ज्ञात करने के लिए मानकीकृत मापनी का प्रयोग किया, जिसमें ई–लर्निंग से सम्बन्धित कुल 60 कथन है, अतः कथनों के आधार पर प्राप्त परिणामों को सारणीबद्ध किया गया है जिसमें परिणाम को 5 रेटिंग स्केल के आधार पर प्रतिशत के रूप में निरूपित किया गया है।

क्रसं	कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	अनिश्चित	अहसमत	पूर्णतः अहसमत	योग
01	ई–लर्निंग में पाठ्यवस्तु को इंटरनेट द्वारा प्रेषित किया जाता है।	37	57	04	02	00	100
02	ई–अधिगम का प्रयोग प्रत्येक स्थान पर किया जा सकता है।	30	50	15	03	02	100

03	ई–अधिगम को कंप्यूटर प्रोत्साहित अधिगम कहते हैं।	34	48	14	03	01	100
04	ई–अधिगम को ऑनलाइन अधिगम कहते हैं।	09	56	14	07	14	100
05	ई–अधिगम में कंप्यूटर, बहु माध्यम का प्रयोग आवश्यक नहीं है।	12	50	18	20	00	100
06	ई–अधिगम की प्रभावशीलता वास्तविक कक्षा कक्ष से कम होती है।	18	47	25	08	02	100
07	ऑनलाइन ई–अधिगम प्रणाली में समय की बचत होती है।	09	53	27	11	00	100
08	मैं अपने गृह कार्य के लिए ई–अधिगम को अधिक उपयोगी मानता हूँ।	19	51	18	12	00	100
09	ई–अधिगम प्रणाली प्रत्येक आयु वर्ग के विद्यार्थियों को अधिगम का अवसर प्रदान नहीं करती है।	14	41	30	15	00	100
10	ई–अधिगम में स्व–अध्ययन से स्वाध्याय की प्रवृत्ति का भी विकास होता है।	30	53	11	05	01	100
11	ई–अधिगम में संबंधित विषयवस्तु की जानकारी के लिए मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है।	34	46	14	05	01	100
12	मैं कभी–कभी ई–अधिगम को प्रयोग करने से बचता हूँ।	13	49	30	07	01	100
13	ई–अधिगम द्वारा वास्तविक ज्ञान प्राप्त करना कठिन है।	19	51	13	14	03	100
14	ई–अधिगम के लिए अनुभवी विषय विशेषज्ञों की आवश्यकता नहीं है।	19	41	24	15	01	100
15	ई–अधिगम को मैं शिक्षा की वैकल्पिक प्रणाली मानता हूँ।	27	40	22	10	01	100
16	अधिगम में विद्यार्थी स्वयं पाठ्यवस्तु का चयन कर अधिगम का माध्यम आवश्यकता अनुसार चयन करता है।	13	49	27	11	00	100
17	मैं अपनी सेमिनार प्रस्तुति को तैयार करने के लिए ई–अधिगम को अधिक उपयोग मानता हूँ।	27	44	16	10	03	100
18	ई–अधिगम अभासी कक्षाकक्ष का प्रतिरूप है।	35	40	09	10	06	100
19	ई–अधिगम में व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुरूप ज्ञान को प्रस्तुत किया जाता है।	28	45	19	07	01	100
20	ई–अधिगम में विद्यार्थी सुविधा अनुासर अध्ययन करते हैं।	23	52	19	06	00	100
21	ई–अधिगम जीवन पर्यंत शिक्षा के वातावरण का सृजन करती है।	10	52	26	09	03	100

22	ई–अधिगम में विषय वस्तु कंप्यूटर संचार प्रणाली द्वारा प्रेषित होने के कारण कठिनाई महसूस करता हूँ।	13	44	31	10	02	100
23	ई–अधिगम द्वारा प्रयोगात्मक कार्य नहीं किया जा सकता है।	13	52	18	11	06	100
24	ई–अधिगम के दौरान छात्राओं के समक्ष आने वाली समस्या का समाधान तुरन्त नहीं हो पाता है।	22	51	16	08	03	100
25	मैं गृह कार्य हेतु अधिगम को उपयोगी मानता हूँ।	29	43	18	09	01	100
26	ई–अधिगम को ऑनलाइन अधिगम भी कहते हैं।	20	46	20	13	01	100
27	ई–अधिगम में शिक्षण हेतु सूचना को संप्रेषित किया जाता है।	36	42	14	07	01	100
28	ई–अधिगम भौगोलिक बाधाओं का समाधान नहीं है।	23	55	18	03	01	100
29	कंप्यूटर आधारित प्रशिक्षण ई–अधिगम का प्रतिरूप नहीं है।	24	49	16	10	01	100
30	ई–अधिगम विद्यार्थी केन्द्रित नहीं होता है।	16	46	19	17	02	100
31	ई–अधिगम में इंटरनेट द्वारा अधिगम का प्रभावी वातावरण निर्मित किया जा सकता है।	23	52	16	07	02	100
32	अधिगम में स्व गति से सीखने के कारण आत्म विश्वास बढ़ता है।	16	53	20	10	01	100
33	ई–अधिगम के लिए इंटरनेट मल्टीमीडिया आदि की आवश्यकता होती है।	29	41	21	08	01	100
34	मैंने पेपर आधारित गतिविधिके बजाय ई–अधिगम को प्राथमिकता दी है क्योंकि इसमें एमिनेशन होता है।	15	46	28	08	03	100
35	प्राइवेट संस्थानों द्वारा ई–अधिगम का प्रयोग अधिक किया जाता है।	17	53	20	08	02	100
36	ई–अधिगम में विद्युत उपकरणों के साथ वेबसाइट, इंटरनेट एवं मल्टीमीडिया की आवश्यकता होती है।	34	45	14	07	00	100
37	ई–अधिगम में मैं नीरसता महसूस करता हूँ।	29	47	18	05	01	100
38	मै ई–अधिगम से सम्बन्धित कार्य में सक्रिय भागीदारी करता हूँ।	22	50	18	08	02	100
39	ई–अधिगम द्वारा स्थानीय एवं भूमंडलीय समुदाय को अधिग का असवर नहीं मिलता है।	14	57	25	03	01	100

40	मुझे ई–अधिगम का उपयोग करने में आत्मविश्वास महसूस होता है।	18	52	21	06	03	100
41	ई–अधिगम प्रणाली मुद्रित सामग्री की अपेक्षा कठिन है।	22	47	19	11	01	100
42	ई–अधिगम प्रणाली परम्परागत अधिगम प्रणाली की अपेक्षा अधिक मितव्ययी है।	21	49	21	08	01	100
43	ई–अधिगम द्वारा व्यक्तिगत क्षमताओं का विकास संभव है।	26	49	17	05	03	100
44	ई–अधिगम के समय मैं अध्ययन में कठिनाई महसूस करता हूँ।	13	50	22	14	01	100
45	ई–अधिगम बहुत अधिक खर्चीली है।	26	51	17	06	00	100
46	ई–अधिगम द्वारा अध्ययन के लिए दृढत्र संकल्पित हूँ।	29	39	24	07	01	100
47	ई–अधिगम को अधिक व्यापक एवं महत्वपूर्ण माना जा सकता है।	20	56	16	04	04	100
48	ई–अधिगम द्वारा छात्रों को उपयुक्त पृष्ठपोषण मिल जाता है।	16	43	32	07	02	100
49	ई–अधिगम सामाजिक जागरूकता बढ़ाने का प्रभावी माध्यम हैं।	24	50	16	09	01	100
50	ई–अधिगम के अंतर्गत दृश्यवातावरण को वेबसाइट द्वारा सशक्त किया जाता हैं।	20	41	23	11	05	100
51	ई–अधिगम को मैं शिक्षा की वैकल्पिक प्रणाली मानता हूँ।	15	57	20	06	02	100
52	ई–अधिगम से मुझे अपने काम को बेहतर तरीके से व्यवस्थित करने में मदद मिलती है।	31	37	20	11	01	100
53	ई–अधिगम लक्ष्य को परंपरागत शिक्षण की अपेक्षा अधिक प्रभावी रूप से प्राप्त कर सकता है।	21	48	22	09	00	100
54	ई–अधिगम के प्रयोग से शिक्षा में गुणवत्ता आती है।	14	47	27	09	03	100
55	ई–अधिगम समाज के प्रत्येक व्यक्ति के विकास में सहायक है।	33	56	07	03	01	100
56	ई–अधिगम द्वारा अपेक्षित सूचना अपेक्षित व्यक्ति को सही समय व सही स्थान पर दी जा सकती है।	43	36	17	03	01	100
57	ई–अधिगम के पश्चात् प्रदत्त कार्य करने में कोई परेशानी नहीं होती है।	24	53	13	09	01	100
58	ई–अधिगम के द्वारा शिक्षक व शिक्षार्थियों के बीच अंतर्क्रिया नहीं होती है।	22	57	13	06	02	100

59	ई–अधिगम करते हुए मै स्वय अध्ययन प्रक्रिया में कठिनाई महसूस करता हूँ।	22	46	15	15	02	100
60	ई–अधिगम का प्रयोग शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में नही किया जा सकता है।	29	40	15	09	07	100

अनुसंधान की शैक्षिक उपादेयताः–

वर्तमान अध्ययन की शैक्षिक उपादेयता निम्न बिन्दुओं के माध्यम से स्पष्ट की जा सकती है–

यह अध्ययन, भविष्य के विद्यार्थियों को ई–लर्निंग के बारे में साहित्य का विवरण प्रदान करता है। अध्ययन में ई–लर्निंग के विचार और परिभाषा और अभिवृत्ति के साथ इसके संबंध की पहचान करने का भी प्रयास किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य सीखने की दिशा में बेहतर समझ में योगदान देना और विद्यार्थियों की ई–लर्निंग के प्रति अभिवृत्ति का मूल्यांकन करना था। जिससे प्राप्त निष्कर्ष विद्यार्थियों को ई–लर्निंग को समझने में सहायता प्रदान करेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

सक्सेना, एन.आर. स्वरूप (2003), 'शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त', मेरठः आर.लाल बुक डिपो।

गुप्ता, प्रो. एस.पी. एवं गुप्ता, डॉ. अलका (2005), 'सांख्यिकीय विधियाँ', इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, युनिवर्सिटी रोड।

गुप्ता, एस.पी. (2008), 'आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन', इलाहाबादः शारदा पुस्तक प्रकाशन, यूनिवर्सिटी रोड।

भार्गव, डॉ. महेश (2009), 'आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन', आगराः एच.पी. भार्गव बुक हाउस, कचहरी घाट।

भटनागर, डॉ. आर.पी. एवं भटनागर, डॉ. मीनाक्षी (2010), 'शिक्षा अनुसंधान', मेरठः इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस।

राय, पारसनाथ एवं राय, डॉ. सी.पी. (2010), 'अनुसंधान परिचय', आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिशर्स।

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-3, Issue-4,January -2025
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number Jon.-2025/04
Impact Factor (RPRI-4.73)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 संजय कुमार

for publication of research paper title

"स्नातक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की ई–लर्निंग के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and

E-ISSN: 2583-438X, Volume-03, Issue-04, Month January, Year-2025.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY